Q. Discuss the Contributions of Neo-freudians to the development of psychology.

Or,

Discuss the Contribution of Horney to the development of psychoanalysis.

Or,

Discuss the Contributions of Karen Horney's psychology.

मनोविज्ञान के विकास में Neo-Freudian वादियों के योगदानों की व्याख्या करें।

अथवा

मनोविज्ञान के विकास में Horney के योगदानों का वर्णन करें।

अथवा

Koren Horney के मनोविज्ञान के योगदानों की व्याख्या करें।

Ans. → Freud के मनोविश्लेषण से सम्बन्ध रखने वाले मनोवैज्ञानिकों के दो समूह हो गए हैं एक समूह में Adler तथा Jung शामिल हो गए। दूसरे समूह में Horney, Fromm, Sullivan, Erikson, Benedict आदि शामिल हो गए। इसी दूसरे समूह को नवीन Freud वादी अर्थात् Neo-Freudian कहा जाता है। उस समूह के प्रत्येक व्यक्ति ने अपने-अपने तौर पर मनोविज्ञान के विकास में योगदान दिया। इन मनोवैज्ञानिकों ने Freud के विचारों का विरोध नहीं किया और न Freud के मनोविश्लेषण को अस्वीकार किया। उन्होंने केवल Freud के विचारों में सुधार लाने का भरसक प्रयास किया। उल्लेखनीय है कि Jung तथा Adler ने Freud के विचारों का विरोध किया और मनोविश्लेषण को अस्वीकार करते हुए अपने-अपने सिद्धान्तों को प्रतिपादित किया

जीवित अनुभूति तथा Adler को विद्रोह कहा जाता है दूसरी ओर नवीन Freud वादियों ने Freud के विरुद्ध कोई विद्रोह नहीं किया। बल्कि परिस्थिति के अनुसार अनुकूल मनोविश्लेषण को उन्नत बनाया। Freud तथा Neo-Freudian के बीच मुख्य अन्तर यह है कि Freud ने केवल जैविक कारकों पर बल दिया जबकि Neo-Freudian वादियों ने जैविक कारकों के साथ-साथ सामाजिक कारकों के महत्व पर बल दिया। Woodworth तथा Sheehan (1975) ने कहा है कि मनोविश्लेषक काफी संकुचित तथा सीमित दृष्टिकोण था। जिसमें केवल जैविक कारकों पर बल दिया गया था, जबकि Neo-Freudian वादियों का विचार अधिक व्यापक था जिसमें सामाजिक कारकों पर अधिक बल दिया गया था।

Neo-Freudian वादियों में Horney का स्थान सबसे अधिक महत्वपूर्ण है उन्होंने Freud के मनोलैंगिक सिद्धान्त की आलोचना करते हुए कहा है कि बच्चों में और विशेष रूप से स्त्रियों में लिंग से सम्बन्धीत Freud के विचार युक्ति संगत नहीं है उन्होंने (1923) में उस विचार का विरोध किया और Freud के उन्होंने अपने व्यक्तिगत विचारों को Social theory या Social psychology के रूप में देखने का प्रयास किया। उन्होंने Freud के मनोविश्लेषण के भिन्न-भिन्न आधार तत्वों अभिधारणाओं तथा सम-प्रत्ययों की व्याख्या सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिवेश में देखने का प्रयास किया। इस सन्दर्भ में Horney के योगदानों तथा उनके अपने मनोविज्ञान के आधार तत्वों को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है

① मॉलिक चिन्ता → (Basic Anxiety)

Horney ने मॉलिक चिन्ता की व्याख्या करते हुए कहा है कि प्रत्येक सामान्य व्यक्ति में रचनात्मक क्षमता होती है जब व्यक्ति को अनुकूल वातावरण मिलता है तो उस क्षमता का विकास पूर्ण रूप से तथा सही दिशा में संभव होता है लेकिन जब वातावरण अनुकूल नहीं मिलता है तो यह क्षमता कुंठित हो जाती है और व्यक्ति चिन्ता का अनुभव करता है यही चिन्ता मॉलिक चिन्ता कहलाती है बच्चे को पहली चिन्ता मॉलिक अवस्था में उस समय मिलती है जबकि उसे दूध छोड़ा दिया जाता है। उस प्रकार की चिंता के तीन पक्ष होते हैं जिन्हें क्रमशः असहाय, बैरभाव तथा एकान्तता कहा जाता है चिन्ता के कारण बच्चा अपने आप को असहाय महसूस करता है उसको ऐसा महसूस होता है कि माता-पिता उसको तिरस्कार करते हैं और सहायता कदापि नहीं चाहते हैं फिर वह बैर भाव रखने लगता है और दूसरों के प्रति आक्रमणकारी व्यवहार करने लगता है जब वह आक्रमणकारी प्रवृत्ति से थक जाता है तो एकान्त में रहने लगता है। अतः Horney के अनुसार संगठित व्यक्तित्व या असंगठित व्यक्तित्व के विकास में मॉलिक चिन्ता का महत्वपूर्ण रोल होता है।

② स्नायुविकृति आवश्यकता तथा प्रवृत्ति (Neurotic Needs and trends) →

Horney ने अपने मनोविज्ञान के अन्तर्गत स्नायुविकृति आवश्यकताओं तथा प्रकृतियों का उल्लेख किया। जब व्यक्ति अपनी समस्याओं के समाधान में सफल नहीं होता है तो वह चिन्ता महसूस करता है उसकी यही चिन्ता स्नायुविकृति, चिन्ता एवं प्रवृत्ति

Scanned with CamScanner

कहलाती है उसके तीन प्रकार होते हैं पहले प्रकार की स्नायु प्रकृति को Complaint type कहते हैं ऐसा व्यक्ति दूसरों पर आश्रित होता है और दूसरे लोगों की स्वीकृति के लिए विनीत रव करते हैं उनकी चिन्ता तब मिटती है जबकि दूसरे प्रकार की स्नायुविकृति प्रवृत्ति को Hostile type कहते हैं ऐसा व्यक्ति दूसरों के प्रति वैर भाव रखता है और उसे सन्तुष्टि तब मिलती है जबकि वह दूसरों को क्षति पहुँचाने में सफल होता है तीसरे प्रकार की स्नायुविकृति प्रवृत्ति को Detached type कहते हैं ऐसा व्यक्ति दूसरे लोगों से अलग रहना चाहता है। उसको सन्तुष्टि तब मिलती है जबकी वह एकान्त का जीवन बिताने में सफल होता है।

(3) आदर्श आत्म प्रतिमा (Idealized self image) → Horney के अनुसार मौलिक चिन्ता को दूर करने के लिए व्यक्ति आदर्श आत्म प्रतिमा का सहारा लेता है वह कल्पना के संसार में जीने लगता है व्यक्ति भिन्न-भिन्न तरह के बाध्यताओं से पीड़ित हो जाता है ऐसा व्यक्ति घमण्डी बन जाता है अपने आपको शक्तिशाली समझने लगता है चतुर समझने लगता है, बुद्धिमान समझने लगता है और श्रेष्ठता के भाव से पीड़ित हो जाता है

(4) रक्षात्मक मनोरचनाएँ (Defence Mechanism) → Horney के अनुसार व्यक्ति अपनी मौलिक चिन्ता को दूर करने के लिए दो प्रकार की रक्षात्मक मनोरचनाएँ का व्यवहार करता है। उन्हें युक्ति आभास (Rationalization) तथा बाहरीकरण (Externalization) कहते हैं। युक्ति आभास

का व्यवहार का उसी अर्थ में किया गया जिस अर्थ में Freud ने उस मनोरचना का व्यवहार किया था। अन्तर केवल इतना है कि Freud के अनुसार युक्ति अभ्यास के द्वारा केवल अवांछनीय इच्छाओं की संतुष्टि की जाती है जबकि Horney के अनुसार सभी प्रकार की इच्छाओं की संतुष्टि की जाती है। जिससे व्यक्ति की चिन्ता दूर होती है। बाहरीकरण का व्यवहार प्रक्षेपण (Projection) के अर्थ में किया गया। Freud ने जिस अर्थ में Projection का ~~अर्थ किया था~~ व्यवहार किया था लगभग उसी अर्थ में Horney ने बाहरीकरण का व्यवहार किया। अन्तर केवल इतना है कि बाहरी करण का सम- प्रत्यय प्रक्षेपण सम- प्रत्यय की अपेक्षा अधिक व्यापक है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि Horney के योगदान अनेक है यह भी स्पष्ट हो जाता है कि Horney सांस्कृतिक तथा सामाजिक कारकों के महत्व पर विशेष रूप से बल दिया और Freud के मनोविश्लेषण के क्षेत्र को व्यापक बनाया।

फिर भी Horney के मनोविज्ञान की आलोचना दो आधारों पर की गई है Lundin (1985) ने कहा है कि Freud, Adler तथा Jung की तुलना में Horney का योगदान काफी सीमित है। दूसरी आलोचना यह दी जाती है कि Horney सामान्य व्यक्तित्व तथा असामान्य व्यक्तित्व दोनों की व्याख्या मौलिक चिन्ता के आधार पर करने का प्रयास किया लेकिन वे अपने प्रयास में सफल नहीं रहे। Horney के मनोविज्ञान की तीसरी आलोचना यह की जाती है कि व्यक्तित्व के

विकास के भिन्न भिन्न अवस्थाओं के सम्बन्ध में ध्यान नहीं दिया। Freud ने पाँच अवस्थाओं का उल्लेख किया और Erikson ने आठ अवस्थाओं का उल्लेख किया। लेकिन Horney ने उस ओर ध्यान नहीं दिया। इसलिए Horney के मनोविज्ञान को अपूर्ण मनोविज्ञान कहा जाता है। Horney के मनोविज्ञान में कुछ त्रुटियों के बावजूद उसके योगदान तथा उपलब्धियों को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। Woodworth तथा Sheehan (1975) ने कहा है कि Horney ने एक ऐसे मनोविज्ञान की स्थापना की जो वस्तुतः मनोविज्ञान मानवशास्त्र तथा समाजशास्त्र की श्रेणी है। उसका गहरा प्रभाव मनोवैज्ञानिकों के साथ-साथ मानव-वैज्ञानिकों तथा समाज शास्त्रियों पर पड़ा उनमें Bendict भी शामिल है। Ruth Bendict वास्तव में शरीर शास्त्री था। जिन्होंने Horney के विचारों को आगे बढ़ाया और सामान्य एवं असामान्य व्यवहारों की व्याख्या में सामाजिक तथा सांस्कृतिक कारकों के महत्व को प्रमाणित किया। उनके योगदानों के कारण मनोविश्लेषण जो कि जैविक उन्मुकता से अधिक सामाजिक उन्मुकता को प्राप्त कर सका। Woodworth तथा Sheehan (1975) ने निष्कर्ष के रूप में कहा है कि Neo-Freudian वादियों और विशेषरूप से Horney तथा Bendict के योगदानों से मनोविश्लेषण Biological orientation से Sociological orientation को उपलब्ध कर सका।

Scanned with CamScanner